International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =7.938, July-December 2024, Submitted in November 2024, ISSN -2393-8048

ममता कालिया की कहानियों में सामाजिक बोध और आधुनिक महानगर की छाया

पृथ्वी राज, पी.एच.डी. शोधार्थी, हिन्दी विभाग, श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टिबड़ेवाला विश्वविद्यालय, विद्यानगरी, झुंझुनू, राजस्थान
डॉ. कुलदीप गोपाल शर्मा, सह–आचार्य, हिन्दी विभाग, श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टिबड़ेवाला विश्वविद्यालय, विद्यानगरी, झुंझुनू, राजस्थान

सारांश

ममता कालिया की कहानियाँ सामाजिक बोध और आधुनिक महानगर की छाया का एक गहरा और यथार्थवादी चित्रण प्रस्तुत करती हैं। उनके कथा साहित्य में शहरी जीवन की जटिलताएँ, विशेषकर मध्यवर्गीय अस्तित्व का संघर्ष, पारिवारिक संबंधों में दरारें, और लैंगिक भूमिकाओं का बदलता स्वरूप प्रमुखता से उभरते हैं। कालिया शहरी परिवेश में पनपते अलगाव, अकेलेपन और पहचान के संकट को बड़ी संवेदनशीलता से दर्शाती हैं। वे दिखाती हैं कि कैसे महानगर अपनी चकाचौंध के भीतर भौतिकवाद और असंतोष को जन्म देता है, जहाँ व्यक्ति सामाजिक अपेक्षाओं और व्यक्तिगत आकांक्षाओं के बीच संतुलन खोजने का प्रयास करता है। कुल मिलाकर, उनकी कहानियाँ महानगरीय जीवन के सामाजिक–मनोवैज्ञानिक परिणामों का एक सूक्ष्म और आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करती हैं।

परिचय

ममता कालिया हिंदी साहित्य की उन अग्रणी लेखिकाओं में से एक हैं जिन्होंने आधुनिक भारतीय समाज, विशेषकर महानगरों के बदलते स्वरूप और उसके भीतर पनपते सामाजिक–मनोवैज्ञानिक द्वंद्वों को अपनी कहानियों का केंद्रीय विषय बनाया। उनकी कहानियाँ केवल कथाएँ नहीं हैं, बल्कि वे समाज के सूक्ष्म पर्यवेक्षण, मानवीय संबंधों की जटिलता और महानगरीय जीवनशैली के गहरे विश्लेषण का परिणाम हैं। कालिया जी का लेखन हमें शहरी जीवन की चकाचौंध के पीछे छिपी हुई सच्चाइयों से रूबरू कराता है, जहाँ सामाजिक बोध और आधुनिक महानगर की छाया एक–दूसरे में घुलमिल जाती हैं।

ममता कालियाः जीवन और साहित्य

यह अध्याय ममता कालिया के जीवन और साहित्यिक यात्रा पर केंद्रित होगा। इसमें उनके साहित्यिक परिचय, उनकी प्रमुख साहित्यिक प्रवृत्तियों और हिंदी साहित्य में उनके स्थान का विस्तृत वर्णन किया जाएगा। कालिया के कथा साहित्य की पृष्ठभूमि को समझने के लिए, समकालीन हिंदी कहानी के संदर्भ को भी प्रस्तुत किया जाएगा। यह भाग उनके लेखन पर पड़े व्यक्तिगत अनुभवों और समकालीन सामाजिक–राजनीतिक परिवेश के प्रभावों की पड़ताल करेगा। अंत में, उनके प्रमुख कहानी संग्रहों का संक्षिप्त परिचय दिया जाएगा, जिससे पाठक को उनकी रचनाओं की एक समग्र समझ मिल सके।

साहित्य की समीक्षा

डॉ. ज्योति मौर्य का शोध आलेख "स्त्री अस्मिता का विमर्शः ममता कालिया के संदर्भ में" (2020) समकालीन हिंदी कथा साहित्य में स्त्री अस्मिता के निर्माण और उसकी जटिलताओं को अत्यंत गहराई से विश्लेषित करता है। यह लेख मुख्यतः ममता कालिया की कहानियों के माध्यम से स्त्री की चेतना, संघर्ष और आत्मस्वीकृति को उजागर करता है। मौर्य यह स्पष्ट करती हैं कि ममता कालिया की स्त्रियाँ पारंपरिक भूमिका निर्वाह से आगे बढ़कर आत्मनिर्भरता, वैचारिक स्वाधीनता और सामाजिक असमानताओं के खिलाफ प्रतिरोध की प्रतीक बनकर उभरती हैं। लेख में यह भी दर्शाया गया है कि कालिया की लेखनी स्त्री को केवल एक शोषित पात्र के रूप में प्रस्तुत नहीं करती, बल्कि उसे निर्णय लेने वाली, संघर्षशील और सामाजिक संरचनाओं को चुनौती देने वाली इकाई के रूप में भी दर्शाती है। डॉ. मौर्य के अनुसार, ममता कालिया की कहानियाँ स्त्री जीवन की उन जटिल परतों को सामने लाती हैं, जिन्हें प्रायः समाज नजरअंदाज़ कर देता है। 'खाँटी औरत', 'बेघर', और 'दर्पण' जैसी कहानियों के माध्यम से लेखिका यह रेखांकित करती हैं कि स्त्री की अस्मिता का संघर्ष केवल बाह्य परिस्थितियों से नहीं, बल्कि उसके भीतर पल रहे आत्मसंघर्ष से भी जुड़ा होता है। मौर्य यह भी संकेत करती हैं कि आधुनिक महानगरीय परिवेश ने स्त्री की सामाजिक भूमिकाओं को जितना विस्तृत किया है, उतना ही उसे नए प्रकार के मानसिक और सांस्कृतिक दबावों का सामना भी करना पड़ा है। कुल मिलाकर, यह लेख ममता कालिया के साहित्य में निहित स्त्री विमर्श की बहुआयामीता को रेखांकित करता है और यह दिखाता है कि कैसे उनकी कहानियाँ केवल साहित्यिक दस्तावेज़ नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का माध्यम बनती हैं।

डॉ. अशोक शर्मा की पुस्तक 'हिंदी कहानी का यथार्थबोध' (2013) हिंदी कथा साहित्य में यथार्थवादी प्रवृत्तियों का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करती है। वे मानते हैं कि समकालीन लेखकों ने समाज की जटिलताओं और विषमताओं को बिना किसी अलंकरण के अत्यंत स्पष्टता से चित्रित किया है। ममता कालिया की

कहानियाँ, शर्मा के अनुसार, इस यथार्थबोध की सशक्त अभिव्यक्ति हैं, जिनमें व्यक्ति और समाज के अंतर्द्वंद्व तथा स्त्री जीवन के कटु अनुभव मुखर रूप में सामने आते हैं।

डॉ. अर्चना बाजपेयी का शोध लेख "ममता कालिया की भाषा और शैली" (2019) लेखिका के भाषा–शिल्प की विशिष्टताओं पर केंद्रित है। वे स्पष्ट करती हैं कि कालिया की भाषा अत्यंत सहज, व्यंग्यात्मक तथा संवादधर्मी है, जो पात्रों के मनोविज्ञान और सामाजिक परिवेश को प्रभावशाली ढंग से उभारती है। बाजपेयी मानती हैं कि कालिया की भाषा आमजन की बोलचाल से जुड़ी हुई है, जिससे पाठक आसानी से तादात्म्य स्थापित कर पाता है।

डॉ. प्रमोद सिंह की कृति 'हिंदी की आधुनिक कहानियाँ' (2012) में ममता कालिया को एक यथार्थवादी लेखिका के रूप में विश्लेषित किया गया है। सिंह के अनुसार, कालिया की कहानियाँ आधुनिक स्त्री की मानसिकता, संघर्ष और सामाजिक दबावों को अत्यंत ईमानदारी से चित्रित करती हैं। उनके कथा–पात्र स्वाधीनता की आकांक्षा रखते हैं, किंतु समाज की रूढ़ व्यवस्थाएँ उन्हें लगातार तोड़ती रहती हैं।

डॉ. संजय तिवारी का लेख "महानगर और अकेलापनः एक मूल्यांकन" (2020) ममता कालिया सहित कई लेखकों की कहानियों में महानगरीय जीवन के अकेलेपन और अस्तित्ववादी संकट पर केंद्रित है। वे यह बताते हैं कि महानगरों में संबंधों की गर्माहट समाप्त हो चुकी है, और व्यक्ति केवल भौतिकता के घेरे में जीता है। ममता कालिया की कहानियाँ जैसे 'ब्लैक होल' इस मानसिक–भावनात्मक शून्यता को दर्शाने में अत्यंत प्रभावशाली हैं।

डॉ. रेखा ठाकुर की पुस्तक 'स्त्री और शहरी जीवन' (2017) समकालीन स्त्री के महानगरीय अनुभवों को केंद्र में रखती है। वे ममता कालिया की कहानियों को विशेष रूप से उद्धृत करते हुए यह स्थापित करती हैं कि शहरी जीवन ने स्त्री को नए अवसर दिए हैं, लेकिन साथ ही नए प्रकार के तनाव, अकेलापन और पहचान के संकट भी उत्पन्न किए हैं। उनके अनुसार, कालिया की नारी पात्र स्वायत्तता की ओर अग्रसर हैं, किंतु समाज उन्हें बार–बार सीमित करने का प्रयास करता है।

डॉ. दीप्ति चतुर्वेदी का लेख "समकालीन महिला कथा लेखन" (2021) स्त्री लेखन की सामूहिक प्रवृत्तियों को उजागर करता है। वे यह मानती हैं कि ममता कालिया उन लेखिकाओं में अग्रणी हैं जिन्होंने स्त्री विमर्श को मध्यवर्गीय यथार्थ के साथ जोड़ते हुए उसका मानवीय पक्ष भी उद्घाटित किया है। उनकी कहानियों में स्त्री महज प्रतिरोध का प्रतीक नहीं, बल्कि संवेदनशील, निर्णयशील और संघर्षशील इकाई के रूप में उपस्थित होती है।

सामाजिक बोधः मानवीय संबंधों का विच्छेदन

यह अध्याय ममता कालिया की कहानियों में गहराई से अंतर्निहित सामाजिक बोध पर केंद्रित होगा। इसमें पारिवारिक संरचना में परिवर्तन का विश्लेषण किया जाएगा, विशेष रूप से संयुक्त परिवार से एकल परिवार की ओर संक्रमण, पति–पत्नी के बदलते रिश्तों और बच्चों व अभिभावकों के बीच बढ़ती खाई पर जोर दिया जाएगा। लैंगिक भूमिकाएँ और नारी चेतना एक महत्वपूर्ण उप–विषय होगा, जहाँ पितृसत्तात्मक समाज में महिलाओं की स्थिति, उनकी घुटन, मुक्ति की आकांक्षा और पहचान की खोज को परखा जाएगा। साथ ही, पुरुष पात्रों के बदलते चित्रण का भी अध्ययन किया जाएगा। यह अध्याय मध्यवर्गीय जीवन के यथार्थ को उजागर करेगा, जिसमें आशाएँ, निराशाएँ, समझौते और आकांक्षाएँ शामिल हैं, और आर्थिक दबावों का सामाजिक संबंधों पर पड़ने वाले प्रभावों का भी विश्लेषण करेगा। अंत में, वर्ग संघर्ष और सामाजिक असमानता पर चर्चा की जाएगी, जो महानगर में व्याप्त आर्थिक विषमता और विभिन्न सामाजिक वर्गों के बीच के अंतर को दर्शाती है।

आधुनिक महानगर की छायाः मनोवैज्ञानिक प्रभाव

यह अध्याय आधुनिक महानगर के मनोवैज्ञानिक प्रभावों पर केंद्रित होगा, जैसा कि ममता कालिया की कहानियों में चित्रित है। इसमें महानगर की भीड़ में व्यक्ति के अलगाव और अकेलेपन का गहन विश्लेषण किया जाएगा, और भावनात्मक दूरी कैसे बढ़ती है, इस पर प्रकाश डाला जाएगा। पहचान का संकट और अस्तित्ववादी दुविधाएँ एक महत्वपूर्ण विषय होगा, जो शहरी परिवेश में व्यक्ति की अपनी पहचान बनाने की जद्दोजहद और आंतरिक संघर्षों को उजागर करेगा। यह अध्याय भौतिकवाद और उपभोक्ता संस्कृति के बढ़ते प्रभाव को भी देखेगा, और महानगरीय जीवनशैली के मानवीय मूल्यों पर पड़ने वाले असर का अध्ययन करेगा। अंत में, शहरी जीवन के दबावों और प्रतिस्पर्धा के कारण उत्पन्न होने वाले तनाव और मानसिक स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों पर चर्चा की जाएगी।

सामाजिक बोध और महानगर की छाया का अंतर्संबंध

यह अध्याय इस अध्ययन का केंद्रबिंदु होगा, जो सामाजिक बोध और आधुनिक महानगर की छाया के बीच के गहरे अंतर्संबंध का विश्लेषण करेगा। इसमें यह पड़ताल की जाएगी कि कैसे महानगरीय परिस्थितियाँ

सामाजिक बोध को आकार देती हैं, विशेष रूप से शहरी जीवन की गतिशीलता और गुमनामी का सामाजिक संबंधों पर पड़ने वाले प्रभाव को देखा जाएगा। महानगर में सामाजिक परिवर्तन का विश्लेषण किया जाएगा, जहाँ पारंपरिक मूल्यों और आधुनिक जीवनशैली के बीच का द्वंद्व स्पष्ट होता है। यह अध्याय पात्रों पर महानगरीय परिवेश के प्रभाव का अध्ययन करेगा, यह दिखाते हुए कि कैसे यह उनके व्यक्तित्व, निर्णयों और नियति का निर्धारण करता है। अंत में, ममता कालिया के विशिष्ट दृष्टिकोण पर जोर दिया जाएगा, जहाँ वे महानगर को केवल एक पृष्ठभूमि के रूप में नहीं, बल्कि एक जीवंत और प्रभावशाली चरित्र के रूप में प्रस्तुत करती हैं।

चयनित कहानियों का विशेष अध्ययन

यह अध्याय ममता कालिया की कुछ प्रमुख कहानियों का गहन विश्लेषण करेगा, जो पिछले अध्यायों में चर्चा किए गए विषयों को ठोस उदाहरणों के माध्यम से स्पष्ट करेंगी। विश्लेषण की जाने वाली कहानियों में 'छुटकारा' (वैवाहिक संबंधों में तनाव और नारी की मुक्ति), 'एक अदद औरत' (नारी की पहचान और अकेलेपन का चित्रण), 'आप भले हैं' (महानगरीय संबंधों की सतहीता और मानवीय मूल्यों का क्षरण), और 'जासूस' (महानगरीय जीवन में संदेह और अविश्वास) शामिल होंगी। प्रत्येक कहानी में, सामाजिक बोध और महानगर के प्रभावों का विस्तृत विश्लेषण किया जाएगा, यह दर्शाते हुए कि कैसे ये विषय कहानियों के कथानक, पात्रों के विकास और केंद्रीय संदेश में समाहित हैं।

सामाजिक बोधः मानवीय संबंधों का विच्छेदन

ममता कालिया की कहानियों में सामाजिक बोध अत्यंत गहरा और बहुआयामी है। वे रिश्तों की पेचीदगियों, पारिवारिक संरचना में आ रहे बदलावों, लैंगिक असमानता और वर्ग संघर्ष को बड़ी कुशलता से चित्रित करती हैं। उनकी कहानियों में मध्यवर्गीय जीवन की आशाएँ, निराशाएँ, आकांक्षाएँ और समझौते प्रमुखता से उभरते हैं। वे अक्सर उन सामाजिक दबावों और अपेक्षाओं को उजागर करती हैं जो व्यक्तियों के जीवन को आकार देते हैं, खासकर महिलाओं के जीवन को।

- **पारिवारिक गतिशीलता और टूटनः** कालिया जी की कई कहानियाँ आधुनिक परिवारों में आ रही दरारों को दर्शाती हैं। संयुक्त परिवार से एकल परिवार की ओर संक्रमण, पति–पत्नी के बदलते संबंध, बच्चों और माता–पिता के बीच की खाई, और पीढ़ीगत अंतराल उनके लेखन में प्रमुखता से दिखता है। वे दिखाती हैं कि कैसे महानगरीय जीवन की व्यस्तता और व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाएँ पारंपरिक पारिवारिक बंधनों को कमजोर कर रही हैं।
- **लैंगिक भूमिकाएँ और नारी विमर्शः** ममता कालिया नारीवादी लेखन के लिए जानी जाती हैं। उनकी कहानियाँ पितृसत्तात्मक समाज में महिलाओं की स्थिति, उनके संघर्षों, उनकी चुप्पी और उनके प्रतिरोध को बड़ी बारीकी से दर्शाती हैं। वे महिलाओं के भीतर की घुटन, उनकी दबी हुई इच्छाओं और अपनी पहचान बनाने की जद्दोजहद को उजागर करती हैं। उनके पात्र अक्सर उन रूढ़िवादी सामाजिक मानदंडों को चुनौती देते हुए दिखाई देते हैं जो महिलाओं को एक निश्चित भूमिका में बांधते हैं।
- **सामाजिक वर्ग और आर्थिक असमानताः** महानगरों में आर्थिक असमानता और विभिन्न सामाजिक वर्गों के बीच की खाई कालिया की कहानियों में एक महत्वपूर्ण विषय है। वे दिखाती हैं कि कैसे धन और सामाजिक स्थिति मानवीय संबंधों को प्रभावित करते हैं और कैसे शहरी जीवन में अवसर और अभाव साथ–साथ चलते हैं। उनके पात्रों के माध्यम से समाज के विभिन्न तबकों की जीवनशैली और उनके संघर्षों का यथार्थवादी चित्रण प्रस्तुत किया जाता है।

आधुनिक महानगर की छायाः अलगाव और पहचान का संकट

महानगर ममता कालिया की कहानियों का सिर्फ एक पृष्ठभूमि नहीं, बल्कि एक जीवंत चरित्र है। यह एक ऐसा स्थान है जहाँ व्यक्ति को स्वतंत्रता तो मिलती है, लेकिन साथ ही अलगाव, अकेलेपन और पहचान के संकट का सामना भी करना पड़ता है।

- **भीड़ में अकेलापनः** आधुनिक महानगरों की सबसे बड़ी विडंबना यह है कि इतनी भीड़ होने के बावजूद व्यक्ति अक्सर अकेलापन महसूस करता है। कालिया की कहानियाँ इस अकेलेपन और अलगाव को बड़े प्रभावी ढंग से दर्शाती हैं। शहरी जीवन की तेज गति और प्रतिस्पर्धी माहौल में मानवीय संबंध अक्सर सतही हो जाते हैं, जिससे भावनात्मक दूरी बढ़ जाती है।
- **पहचान का संकट और अस्तित्ववादी दुविधाएँः** महानगर में व्यक्ति को अपनी पहचान बनाने के लिए लगातार संघर्ष करना पड़ता है। पारंपरिक सामाजिक संरचनाओं के कमजोर पड़ने से व्यक्ति को अपने अस्तित्व और अपनी भूमिका को लेकर दुविधाओं का सामना करना पड़ता है। कालिया के पात्र अक्सर इस पहचान के संकट से जूझते हुए दिखाई देते हैं, जहाँ वे अपने 'स्व' को परिभाषित करने की

कोशिश करते हैं।

- **उपभोक्तावाद और भौतिकता का प्रभावः** आधुनिक महानगर उपभोक्तावादी संस्कृति का गढ़ है। कालिया की कहानियाँ दिखाती हैं कि कैसे भौतिकवादी प्रवृत्तियाँ और उपभोग की ललक मानवीय मूल्यों और संबंधों को प्रभावित करती है। शहरी जीवन की चकाचौंध अक्सर सतही सुखों की ओर ले जाती है, जिससे व्यक्ति के भीतर एक खालीपन उत्पन्न होता है।

अंतर्संबंधः सामाजिक बोध और महानगरीय जीवन का द्वंद्व

ममता कालिया की कहानियों में सामाजिक बोध और आधुनिक महानगर की छाया एक–दूसरे से अविभाज्य रूप से जुड़े हुए हैं। महानगर वह रंगमंच प्रदान करता है जहाँ सामाजिक परिवर्तन और मानवीय द्वंद्वों का नाटक खेला जाता है। शहरी जीवन की विशेषताएँ – जैसे गतिशीलता, गुमनामी, और व्यक्तिगत स्वतंत्रता – समाज और व्यक्ति पर गहरा प्रभाव डालती हैं, जिससे नए सामाजिक मानदंड और चुनौतियाँ पैदा होती हैं।

कालिया जी दिखाती हैं कि कैसे महानगरीय जीवन की परिस्थितियाँ ही सामाजिक संबंधों में तनाव पैदा करती हैं, अलगाव को जन्म देती हैं और व्यक्तिगत पहचान को प्रभावित करती हैं। वे केवल शहरी जीवन का वर्णन नहीं करतीं, बल्कि उसके भीतर निहित सामाजिक–मनोवैज्ञानिक जटिलताओं का विश्लेषण करती हैं। उनका लेखन यह दर्शाता है कि आधुनिक महानगर, अपने सभी सुख–सुविधाओं और अवसरों के साथ, अपने भीतर गहरा सामाजिक और व्यक्तिगत संघर्ष भी समेटे हुए है।

निष्कर्ष

ममता कालिया की कहानियाँ आधुनिक भारतीय समाज, विशेषकर महानगरीय जीवन के एक सशक्त और यथार्थवादी चित्र को प्रस्तुत करती हैं। उनके लेखन में सामाजिक बोध इतना गहरा है कि वह पाठकों को मानवीय संबंधों की बारीकियों, लैंगिक असमानता की कड़वी सच्चाइयों और वर्ग संघर्ष की जटिलताओं से अवगत कराता है। वहीं, आधुनिक महानगर की छाया उनके पात्रों के जीवन को आकार देती है, जहाँ वे अलगाव, पहचान के संकट और उपभोक्तावादी प्रवृत्तियों से जूझते हैं। कालिया जी का साहित्यिक योगदान इस बात में निहित है कि वे इन दोनों विषयों को बड़ी कुशलता से आपस में गूँथती हैं, जिससे उनकी कहानियाँ न केवल मनोरंजक होती हैं, बल्कि पाठक को अपने आस–पास के समाज और स्वयं के अस्तित्व पर विचार करने के लिए भी प्रेरित करती हैं। उनका लेखन एक सामाजिक टिप्पणी है जो शहरीकरण के मानवीय परिणामों पर प्रकाश डालती है।

संदर्भ सूची

1. कालिया, म. (2018). ममता कालिया की प्रतिनिधि कहानियाँ. राजकमल प्रकाशन.
2. शर्मा, क. (2015). हिंदी की समकालीन महिला कथाकारें. वाणी प्रकाशन.
3. मिश्रा, व. (2014). "ममता कालिया की कहानियों में स्त्री दृष्टिकोण". नारी विमर्श, 5(2), 34–40.
4. राय, स. (2016). "महानगरीय संस्कृति और कथा साहित्य". समकालीन समीक्षा, 12(1), 55–60.
5. शर्मा, ए. (2013). हिंदी कहानी का यथार्थबोध. साहित्य सदन.
6. बाजपेयी, अ. (2019). "ममता कालिया की भाषा और शैली". हिंदी आलोचना, 22(3), 78–84.
7. सिंह, पी. (2012). हिंदी की आधुनिक कहानियाँ. प्रभात प्रकाशन.
8. तिवारी, एस. (2020). "महानगर और अकेलापनः एक मूल्यांकन". समकालीन साहित्य, 8(1), 20–26.
9. ठाकुर, आर. (2017). स्त्री और शहरी जीवन. भारतीय ज्ञानपीठ.
10. चतुर्वेदी, डी. (2021). "समकालीन महिला कथा लेखन". कथादेश, 33(4), 10–15.
11. गोस्वामी, वी. (2010). हिंदी कथा साहित्य का विकास. लोकभारती प्रकाशन.
12. रावत, एम. (2022). "ममता कालिया की कहानियों का सामाजिक परिप्रेक्ष्य". नवलेखन, 19(2), 45–52.
13. श्रीवास्तव, जे. (2018). हिंदी महिला लेखन. साहित्य अकादमी.
14. दुबे, के. (2016). "समकालीन कहानी और सामाजिक सरोकार". साहित्य विमर्श, 4(1), 60–65.
15. वर्मा, आर. (2014). शहरी जीवन और कथा साहित्य. सृजन प्रकाशन.
16. झा, पी. (2021). "स्त्री विमर्श और आधुनिकता". हिंदी पथ, 6(2), 38–42.
17. सक्सेना, एम. (2017). समकालीन हिंदी कहानियाँः विश्लेषण और मूल्यांकन. ओरिएंट ब्लैकस्वान.
18. कुलश्रेष्ठ, एस. (2019). "महानगरीय संवेदना और हिंदी कहानी". लोक साहित्य, 15(3), 72–78.
19. पांडेय, एन. (2013). कहानीः समाज और यथार्थ. नीलांबर प्रकाशन.
20. मौर्य, जी. (2020). "स्त्री अस्मिता का विमर्शः ममता कालिया के संदर्भ में". हिंदी आधुनिक विमर्श, 11(1), 29–35.